शत्रोक्त विवाह व्यवहार

Do not fear marriage hood

विवाह से डरो मत

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जम्बिभ्रत एमसि । ऊर्जम्बिभ्रद्वः सुमनाः सुमेधा गृहाऐमि मनसा मोदमानः ॥

Yajurved 3:41

हे ब्रह्मचर्याश्रम से सब विद्याओं को ग्रहण किये गृहाश्रमी तथा (ऊर्जम्) शौर्यादिपराक्रमों को (बिभ्रतः) धारण किये और (गृहाः) ब्रह्मचर्याश्रम के अनन्तर अर्थात् गृहस्थाश्रम को प्राप्त होने की इच्छा करते हुए मनुष्यो! तुम गृहस्थाश्रम को यथावत् प्राप्त होओ **उस गृहस्थाश्रम के अनुष्ठान से (मा बिभीत) मत डरो तथा** (मा वेपध्वम्) मत कम्पो तथा पराक्रमों को धारण किये हुए हम लोग (गृहान्) गृहस्थाश्रम को प्राप्त हुए तुम लोगों को (एमसि) नित्य प्राप्त होते रहें और (वः) तुम लोगों में स्थित होकर इस प्रकार गृहस्थाश्रम में वर्त्तमान (सुमनाः) उत्तम ज्ञान (सुमेधाः) उत्तम बुद्धि युक्त (मनसा) विज्ञान से (मोदमानः) हर्ष, उत्साह युक्त (ऊर्जम्) अनेक प्रकार के बलों को (बिभ्रत्) धारण करता हुआ मैं अत्यन्त सुखों को (एमि) निरन्तर प्राप्त होऊँ॥४१॥

A youthful girl filled from celibacy, obtains a suitable husband.

ब्रह्मचर्य से परिपूर्ण युवा कन्या को सुयोग्य पति को प्राप्त होती है।

ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। अनड्वान्ब्रह्मचर्येणाश्वो घासं जिगीर्षति ॥

Atharvaveda 11:5:18

(कन्या) कन्या (ब्रह्मचर्येण) ब्रह्मचर्य धारण करने के पश्चात् (युवानम्) युवा ब्रह्मचारी को (पतिम्) पतिरूप में (विन्दते) प्राप्त करती है।

Accept good women and leave evil ones(no other distinction other than quality of person, not even caste)

अच्छी महिलाओं को स्वीकार करें और बुरी महिलाओं को छोड़ दें (व्यक्ति की गुणवत्ता के अलावा कोई अन्य भेद नहीं, यहां तक कि जाति भी नहीं)

आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत्ते कुत्सः सख्ये निकामः। स्वे योनौ नि षदतं सरूपा वि वां चिकित्सदृतचिद्ध नारी ॥१०॥

Rigveda 4:16:10

हे पुरुष ! आप निन्दित स्त्री का त्याग करके समान रूपवाली और दोषों के नाश करनेवाली को प्राप्त होओ और दोनों मिल कर प्रीति से अपने गृह में रहो ॥१०॥

Caste is no base for the order of marriage, equal qualities of couple are
विवाह के क्रम के लिए जाति कोई आधार नहीं है, जोड़े के समान गुण हैं

ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्समानतः समना पप्रथानाः। ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते ॥८॥

Rigveda 4:51:8

हे मनुष्यो ! अपने सदृश तुल्य गुण, कर्म और स्वभाववाली सत्य की जाननेवाली पण्डिता जो शिक्षा को ग्रहण किये हुए, रूप और कान्ति आदि उत्तम गुणों से युक्त, विदुषी, ब्रह्मचारिणी कन्या होवें उन्हीं को यथायोग्य विवाहो ॥८॥

ता आ चरन्ति समना पुरस्तात्समानतः समना पप्रथानाः। ऋतस्य देवीः सदसो बुधाना गवां न सर्गा उषसो जरन्ते ॥८॥

यजुर्वेद 4:51:8

हे मनुष्यो ! जो (पुरस्तात्) पुरस्तात् कृत ब्रह्मचर्य्य परीक्षा अर्थात् प्रथम ब्रह्मचर्य्य की परीक्षा जिनकी की गयी ऐसी (समानतः) सदृश पतियों से (समना) तुल्य गुण, कर्म और स्वभाववाली (ऋतस्य) सत्य की (देवीः) जाननेवाली पण्डिता (पप्रथानाः) विस्तीर्ण विद्या और सौन्दर्य्य आदि गुणयुक्त कन्या (सदसः) श्रेष्ठ पुरुषों को (बुधानाः) ज्ञान से जगाती (उषसः) प्रातर्वेलाओं के (समना) समान और (गवाम्) गौओं के (सर्गाः) उत्पन्न हुए वृन्दों के (न) समान (आ, चरन्ति) आचरण करती और (जरन्ते) स्तुति करती हैं (ताः) उनको विवाहो ॥८॥

Marriage by the base of equal abilities
समान क्षमताओं के आधार पर विवाह

देवीरापः शुद्धा वोढ्वँ सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयम्परिवेष्टारो भूयास्म ॥

Yajurved 6:13

अपने समान पतियों को (वोढ्वम्) प्राप्त होती हैं और वे विद्वान् पतिजन उन स्त्रियों को प्राप्त होते हैं, वैसे तुम हो और हम भी (परिवेष्टारः) उस कर्म की योग्यता को (भूयास्म) पहुँचें।॥१३॥

Both husband wife should be supplement for each other
दोनों पति-पत्नी एक-दूसरे के पूरक होने चाहिए।

स्तोमाआसन्प्रतिधयः कुरीरं छन्द ओपशः। सूर्याया अश्विनावराग्निरासीत्पुरोगवः ॥

Atharvaveda 14:1:8

(स्तोमाः) स्तुतियोग्य गुण (सूर्यायाः) प्रेरणा करनेवाली [वा सूर्य की चमक के समान तेजवाली] कन्या के (प्रतिधयः) वस्त्रों के अंचल [समान] (आसन्) हों, (कुरीरम्) कर्तव्यकर्म और (छन्दः) आनन्दप्रद वेद (ओपशः) मुकुट [समान हो] और (अग्निः) अग्नि [शारीरिक और बाहिरी अग्नि द्वारा स्वास्थ्य, शिल्प, यज्ञ आदि विधान] (पुरोगवः)अग्रगामी [पुरोहित समान] (आसीत्) हो, [जब कि] (अश्विना) विद्या को प्राप्त दोनों [वधू वर] (वरा) परस्पर चाहनेवाले [वा श्रेष्ठ गुणवाले] हों ॥८॥

Potential suitors should know and test each other
संभावित विवाहार्थी को एक-दूसरे को जानना और परीक्षण करना चाहिए।

सोमोवधूयुरभवदश्विनास्तामुभा वरा। सूर्यां यत्पत्ये शंसन्तीं मनसासवितादददात् ॥

Atharvaveda 14:1:9

ब्रह्मचारी औरब्रह्मचारिणी पूर्ण विद्या प्राप्त करके परस्पर गुणों की परीक्षा करके कराकेगृहाश्रम में प्रवेश करें और परमेश्वर को धन्यवाद दें कि बड़े भाग्य से तुल्यगुण कर्म स्वभाववाले स्त्री-पुरुषों का जोड़ा मिलता है ॥९॥

Couple with opposite qualities are not meant to be wed
विपरीत गुणों वाले जोड़े शादी करने के लिए नहीं होते हैं

तृष्टमेतत्कटुकमपाष्ठवद्विषवन्नैतदत्तवे। सूर्यां यो ब्रह्मा वेद सइद्वाधूयमर्हति ॥

Atharvaveda 14:1:29

जहाँ पर वधू-वर परस्परविरोधी निर्गुणी होते हैं, वहाँ गृहाश्रम में विपत्ति एवं विवाद रहता है, और जब दोनोंपूर्ण विद्वान् और युवा होकर परस्पर गुण जानकर विवाह करते हैं, तब वे गृहाश्रममें आनन्द भोगते हैं ॥२९॥

यह प्रश्न ही अनुचित है की दोनों विवाह में कौन सही है. प्रश्न यह होना चाहिए विवाह की आधारभूत परिकल्पना क्या है? दो गृहस्थ होकर समाज का और अपना कल्याण करें. आह्व उन्हें साथ रहकर मित्रभाव से गृहस्थ के नियमों में चलना हैं. अब खुदसे प्रश्न कीजिये मैत्री होती किसकी है? सामान स्वभाव वालों की. आप अपने सगे भाई से संभवतः उतना न जुड़ पाए जिनता किसी और के भाई से. कुछ भी निर्णय लेना हो तो उसे ही याद करें. मैत्री मनुष्य की प्रकृति से होती है. सबसे सुखद भी मैत्री का सम्बन्ध है जिसमे छल नहीं. अन्य समबन्धों में अवश्य आवश्यकता आने पर ऊंच नीच हो जाती है पर मित्रता में एसा नहीं हुआ करता. यहाँ राह चलते से की मित्रता नहीं कही गयी. इश्वर भी मनुष्यों को अपना मित्र कहतें है, और गृहस्थों को उइप्देश भी करते हैं मित्रभाव से रहो.

जब आप दो व्यक्तियों को एक कमरे में बंद करदें और उनसे मित्रता की आशा करें और दरवाज़ा न खोलें तो या तो वे दोनों संयोगवश अगर सम-प्रकृति के हुए तो अवश्य मैत्री कर लेंगे, यदि एक कमजोर प्रकृति का है तो दूसरा उस पर अधिकार जमाएगा- उसका जीवन निरस कर देगा या विपरीत प्रकृति के होने से दोनों परस्पर लड़कर एक दुसरे की हत्या कर देंगे

जहाँ योग्यता है वाही वृद्धि है

आज के समाज में या कल के भी जहाँ स्त्रियाँ शिक्षित थीं वे विश्व की वृद्धि पुरुषों से कहीं अधिक करती एवं जहाँ विद्या का प्रसार है वहां मानव ही भगवत तुल्य हो जाता है. इश्वर की व्यवस्था में विद्या ही बुद्धि का पद है

सा विद्या या विमुक्तये। विष्णुपुराण १-१९-४१

--- विद्या वही है जो मुक्त कर दे

अजरामरवत् प्राज्ञः विद्यामर्थं च साधयेत् ।

गृहीत एव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥

संस्कृत उद्धरण एनआर। 378 (महा-सुभाषिता-समग्रह)

बुढापा और मृत्यु नहीं आनेवाले है, ऐसा समझकर मनुष्य को विद्या और धन प्राप्त करना चाहिए। पर मृत्यु ने हमारे बाल पकड़े हैं, यह समझकर धर्माचरण करना चाहिए।

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम् ।

सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥१०॥

हितोपदेशः०१

अनेक संशयों को दूर करनेवाला, परोक्ष वस्तु को दिखानेवाला, और सबका नेत्ररुप शास्त्र जिसने पढ़ा नहीं, वह व्यक्ति (आँख होने के बावजुद) अंधा है।

संशयात्मा विनश्यति ।

भगवद गीता अध्याय 4, श्लोक 40

संशयपूर्ण आत्मा न इस जीवन में या अगले में कभी वह सुख नहीं पाता।

(संदेहपूर्ण व्यक्ति नीचे गिरता है)

शास्त्र को देखकर भी शंका करने से अच्छा क्या इसका उदाहरण होगा ?

संशयपूर्ण आत्मा न इस जीवन में या अगले में कभी वह सुख नहीं पाता।

(संदेहपूर्ण व्यक्ति नीचे गिरता है)

शास्त्र को देखकर भी शंका करने से अच्छा क्या इसका उदाहरण होगा ?

की इतने प्रमाण देने पर भी सत्य के स्वीकारने में समाज से या अमुक-अमुक से भय हो। पांच लोगों को छोड़िये जो उनके और संसार के प्रत्येक द्रव्य को अपनी उद्योग शक्ति से धारण किए है, जिसकी उपासना स्वयं श्री राम, लक्ष्मण कृष्ण करते थे। उसी की शरणागती लें, यही आप्त पुरुषों को मान्य है और उस सर्वशक्तिमान परमेश्वर की आज्ञा है।

गृहाश्रम से कौन डरता है? डर उसे होता है जो शंकित हो, जिसे वस्तुस्थिति स्पष्ट होती है वह पीड़ा अनुभव कर सकता है भय नहीं।
भय के कारण तत्व को जान लेने से या तो सुख मिलता है। जिससे उत्साह होता है या परिणाम दुखद होने से व्यक्ति पीड़ित होता है।
स्पष्टता होने के बाद भय नहीं रहता या रहता है तो स्थिति स्पष्ट नहीं है नहीं तो पूर्णतया स्पष्ट होने पर संसार में भय नहीं रहता।

जो मानते हैं ईश्वर कह रहा है गृहा मा बिभीत से अर्थ लगाते हुए की विवाह संस्कार से मत डरो अर्थात विवाह किसी से भी हो संकोच मत करो। परंतु यह बतलाईए जिनकी शादी उनकी इच्छा से नहीं होती वे पीड़ा में होते हैं या भय में। जिसे स्पष्ट पता है आसक्ता नहीं उसका भय पीड़ा का रूप लेता है। मंत्र कहता है गृहाश्रम के व्यवहार से मत घबराओ, किससे कह रहा है? ब्रह्मचारी एवं ब्रह्मचारिणीयों को कि आप गृहाश्रम संस्कार में न घबराएं। किससे न घबराएं? जो इस गृहाश्रम के व्यवहार में बाधा हैं। अब मंत्र वापस देखिए - वह कहता है मत डरो तो वह बताईए भयभीत कौन हो सकता है। जिनका विवाह बलपूर्वक हुआ है या जो गृहस्थाश्रम - ग कर अपने हाल है।

कोई प्रसिद्ध धारणा लगाकर कहें की जवान शादी करते में घबराते है। उसकी बात है। तो यह भी असत्य है वे आलस के कारण यह करते हैं। लड़के जिम्मेदारी और रोजगार के भय से और लड़की रसोई के डर से क्योंकि मातृगृह में माता ही अधिक ध्यान रखती है। सो यह भी भय नहीं आलस ही रहा

अंतभाव में खुद विचारें कौन भयभीत होने योग्य है पर कोई गृहाश्रम का अनुष्ठान करने वाले या बलपूर्वक विवाह कर दिया जाने वाले

यह शंका की भी आवश्यकता इस बात से खत्म हो जाती है जब ईश्वर स्वयं ब्रह्मचारियों को भयभीत होने से मना करते हैं। वरना माता पिता के नाम से यह मंत्र का निर्माण होता